7

लोककथा 'गड़रिया राजा' अर्थ एवं विश्लेषण*

नीरजा मिश्रा
अनुवादक - सीमंतनी रांगेय राघव

लोकसंस्कृति से परिचित कराने के लिए बच्चों को लोककथाएँ सुनानी ज़रूरी हैं। लोककथाएँ किसी भी समाज की संस्कृति या उसकी जीवनशैली को एक समूचे, समन्वित रूप में प्रस्तुत करती हैं। उनमें बूढ़ों, नौजवानों, स्त्रियों/पुरुषों सभी का ब्यौरा होता है और वे सभी को बाँधे भी रखती हैं। लोककथाओं का अर्थ जानना तथा उसका विश्लेषण करना भी कहानी सुनाने वाले को आना ज़रूरी है, ताकि सही रूप में कहानी श्रोता तक पहुँचा सके।

एक राजा था। उसके कोई संतान नहीं थी। राजपंडित ने बताया कि सुबह जल्दी उठकर राजमहल के द्वार पर बैठ जाओ और जो भी कोई सबसे पहले दिखे, उसे ही अपना वारिस बना लेना। सवेरे जल्दी उठकर राजा महल के द्वार पर बैठ गया। इतने में एक गड़रिया अपनी भेड़ों को लेकर उधर से निकला। राजा के सिपाहियों ने गड़रिये को पकड़कर राजा के सामने खड़ा कर दिया।

राजा ने लड़के को देखकर कहा, "अब तुम हमारे पुत्र हो। हम तुमको राजा बनाएँगे। तुम हमारे मरने के बाद राज्य के मालिक बनोगे।" फिर लड़के को हाथी पर बिठाकर पूरे राज्य में घुमाया, पलंग पर बिठाकर नौकरों ने उसके पैर दबाए, मालिश की। उसके बाद रानी ने अगरबत्ती, धूप से आरती उतारी और स्वागत करने के बाद पान खिलाया।

इस सबसे लड़का दु:खी हो गया। वह मन में सोचने लगा कि पता नहीं ये लोग मुझे और कौन-कौन से दु:ख देंगे। कैसे भी करके यहाँ से भागना चाहिए। उसे भागने का एक उपाय सूझा। लड़का राजा से बोला, "मुझे कुछ समय दे दो। मैं अपनी अम्मा को नहीं बताऊँगा तो वह बहुत चिंता करेगी। भेड़ों को घर छोड़ आऊँ, नहीं तो वे खो जाएँगी।"

राजा ने यह सुनकर जाने की इज़ाज़त दे दी। उसने सोचा कि लड़का जल्दी लौट आएगा। परंतु लड़का क्यों लौटता? वह तो भागकर घर पहुँचा और अपनी आपबीती अम्मा को सुनाई।

लड़का - अम्मा! राजा ने मुझे बहुत दु:ख दिया।

अम्मा - अरे बेटा! क्या दु:ख दिया?

लड़का - चार पाँव वाके थापक थइया
आगे है लपकइया
ताहि बिठाए मोहि सरग दिखायो

* *प्रारंभ* शैक्षिक संवाद शिक्षा की त्रैमासिक पत्रिका (अप्रैल-जून 2009) से साभार

तबहू न मरऊँ मोरी मइया!

(उसके चार मोटे-मोटे पाँव थे। आगे कुछ हिलता हुआ लटक रहा था। उस पर बिठाकर मुझे स्वर्ग दिखाया। मैं तब भी नहीं मरा, मेरी माँ।)

अम्मा - अरे मेरे लाल! और कौन-सा दु:ख दिया?

लड़का- ऊँचे-ऊँचे पलंग बिछाओ
तापर धरयो रजइया
ताहि बिठाय मोहि मुक्कन मारयो
तबहू न मरऊँ मोरी मइया

(ऊँचे-ऊँचे पलंग बिछाए। उन पर रजाई रखी। उस पर बिठाकर मुझे मुक्के मारे। मैं तब भी नहीं मरा, मेरी माँ!)

अम्मा - और मेरे बेटे को क्या दु:ख दिया?

लड़का - राजा की एक रनिया आई
करत झमक झइयो
लाहि लुकाट मोहि खूब जरायो
तबहू न मरऊँ मोरी मइया!

(झमक-झमक करती हुई राजा की एक रानी आई। जलती लकड़ी से मुझे खूब जलाया। मैं तब भी नहीं मरा, मेरी माँ!)

अम्मा - ओहो! और कौन-सा दु:ख दिया?

लड़का - पीपर केरा पात मँगायो
तापर हग्यो चिरैया
ताहि खाये, मोहि लहु निकारयो
तबहू न मरऊँ मोरी मइया!

(पीपल का एक पत्ता मँगाया। जिस पर चिड़िया ने बीट की। उसको खिलाकर मुँह से मेरा खून निकाला। मैं तब भी नहीं मरा, मेरी माँ!)

अम्मा - हाय दैया! मेरे लड़के ने इतना दु:ख पाया।

फिर माँ ने लड़के को सलाह दी कि राजमहल के पास भेड़ चराने मत जाना, नहीं तो राजा पकड़वाकर इसी तरह दु:ख देंगे।

राजा के प्रति द्रोह, जमींदार की खिलाफ़त, ब्राह्मण और बनिए का विरोध सभी कुछ शामिल होता है। 'गड़रिया राजा' कहानी में ठीक यही बात उभरती है। कहानी दो भिन्न दृष्टिकोणों, जीवन के दो अलग तौर-तरीकों को प्रस्तुत करती है। एक दृष्टिकोण बच्चे और उसकी माँ का है– समाज के हाथों प्रताड़ित, शोषित वे वर्ग, जो हाशिए पर रहते हैं, परंतु समसामयिक संदर्भों में जो अब भी एक संभावनापूर्ण जीवनशैली के स्रोत हो सकते हैं। आज जब हमारा देश दूरदर्शन पर दिखाई जाने वाली लुभावनी उपभोगवादी सामग्री से चकाचौंध हो रहा है और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए देश में मार्ग प्रशस्त कर रहा है, तब इस कहानी में 'राजा की जीवनशैली' उस तथाकथित सुख और विलास की ज़िंदगी पर उठाए गए सवाल ज़्यादा

प्रासंगिक हो जाते हैं। यह भी जाहिर होता है कि वे मूल्य जो आम आदमी के हैं, कितने मौजूद हैं, परंतु जिन्हें हमने पिछड़ा, असभ्य, गँवार घोषित करके, इस वैकल्पिक जीवनशैली को पूरी तरह त्याज्य और हेय बना रखा है। हमारी कहानी का नायक गड़रिया बालक राजा की जीवनशैली से पूर्णतया अप्रभावित रहता है। वह न उससे लड़ता है, न ही उसे खारिज करता है। खुद के सुख के बारे में उसकी दृष्टि साफ़ है। वह अपनी भाषा में, अपने नज़रिये से उसका (उस विलासपूर्ण जीवन का) ब्यौरा देता है।

माँ की दृष्टि भी दिखावे, सफ़लता और महत्वाकाँक्षा के इन भौतिक मापदंडों से अप्रभावित है। माँ के लिए उसके बच्चे का सुख, उसका आराम ज़्यादा महत्वपूर्ण है। बच्चे की दुनिया, उसकी खुशी को हाथी द्वारा रौंदना या कि वे सब आकर्षक चीज़ें जो राजत्व के संसार से जुड़ी हुई हैं और फँसा लेती हैं, उस पूरी प्रक्रिया का हिस्सा है, जो अब भी ज़ारी है। परंतु क्या हमें ऐसा होने देना चाहिए। बच्चा ऐसी दुनिया को अपने ऊपर हावी नहीं होने देता। बच्चा अपनी अक्ल और नैसर्गिक प्रवृत्ति से जिस पर अभी तक 'पिछड़ा', 'गँवार' के ठप्पे चस्पां नहीं किए गए हैं, वह आराम से अपनी दुनिया में लौट आता है, जहाँ उसके अनुसार सुख है। उसकी दृष्टि को उसकी माँ पुख्ता करती है, क्योंकि वह उससे पूरी तौर से जुड़ी हुई है। इसका एकमात्र कारण क्या माँ का प्रेम है, जिसने इस तथाकथित सफलता, महत्वाकाँक्षा, दिखावे की दुनिया द्वारा तकलीफ़ सही है? राजा की दुनिया हर जगह हावी हो रही है, हर कोने में छा रही है। बच्चे को उसकी माँ का बड़ों के प्रेम से वंचित करना, उसको ऐसी दुनिया में धक्का दे, उसे जीवन से साक्षात्कार करवाना, उसे पीड़ा पहुँचाना है और यह हम सभी कर रहे हैं।

कितने सरल, सीधे तरीके से संक्षेप में यह कहानी वह कहती है, जिसे 'बौद्धिक', 'अकादमिक', 'राजनैतिक' जगत् में विचारधारा कहा जाएगा। आम आदमी या कि उस बच्चे के पास तो एक बेहद मासूम तरीका था आख्यान (नैरेटिव) का, जिसके माध्यम से उसने अपनी बात कही, उस पर अडिग रहा और जिसके बल पर उसने राजा के महल और उसके चौगिर्द घूमती दुनिया को ठुकराया।

❑❑❑